RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 74, अंक : 26 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 24 सितम्बर, 2017
विक्रमी सम्वत् 2074, सृष्टि सम्वत् 1960853118
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–74, अंक : 26, 21-24 सितम्बर 2017 तदनुसार 9 अश्विन सम्वत् 2074 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

स्तुति करने पर भगवान् को हृदय में पाते हैं

–ले० स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

हस्ते दधानो नृम्णा विश्वान्यमे देवान्धाद् गुहा निषीदन्।
विदन्तीमत्र नरो धियंधा हृदा यत्तष्टान्मन्त्राँ अशंसन्।।
–ऋ० १।६७।२

शब्दार्थ–वह भगवान् **विश्वानि** = सब **नृम्णा** = धनों, बलों, मनुष्योपयोगी पदार्थों को **हस्ते** = अपने हाथ में, अपने अधीन **दधानः** = धारण करता हुआ, रखता हुआ और **गुहा** = हृदय-गुहा में **निषीदन्** = नितरां रहता हुआ **देवान्** = सब देवों को **अमे** = भय में, ठिकाने पर **धात्** = रखता है। **धियंधाः** = ध्यानधारी बुद्धिमान् **नरः**–मनुष्य **ईम्** = उसको **अत्र** = इसी में, अपने हृदय में **विदन्ति** = प्राप्त करते हैं, **यत्** = जब वे **हृदा** = हृदय से **तष्टान्** = निकले, विचारे **मन्त्रान्** = मन्त्रों के द्वारा **अशंसन्** = स्तुति-प्रार्थना करते हैं।

व्याख्या–ईश्वर को मानने वाले आस्तिक ईश्वर की खोज में हैं। कोई उसे आकाश से ऊपर मानकर वहाँ जाने की अपनी शक्ति न देखकर उसे सदा अदृश्य मान बैठता है। साधारण मनुष्य भगवान् को धनपति मानकर उसकी चाहना करता है। वेद कहता है कि वह–**'हस्ते दधानो नृम्णा विश्वानि'**–सम्पूर्ण धनों को अपने अधीन रखता है। जो वस्तु जिसके अधिकार में होती है, उसका मिलना उसी से सम्भव है, अन्य से नहीं। किसी पदार्थ को प्राप्त करने के लिए अपनी योग्यता का भी प्रदर्शन करना होता है। यदि कोई सोचे कि हम उससे बलात् धन छीन लेंगे, तो उसे समझ लेना चाहिए कि वह भगवान्– **अमे देवान् धात्** = देवों को भी भय में रखता है।

भीषास्माद्वातः पवते भीषोदेति सूर्यः।
भीषास्मादग्निश्चेन्द्रश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः।। –तैत्ति० २।८।१

इसके भय से वायु चलता है, सूर्य मानो इसी के भय से उदय होता है। अग्नि और विद्युत् भी मानो इसी के भय से क्रिया करते हैं। मौत भी मानो इसके डर से दौड़ रही हैं।

प्रधानमल्ल-न्याय से सिद्ध हुआ कि सम्पूर्ण प्राकृतिक शक्तियाँ उसी के डर से कार्य कर रही हैं, अतः तुम, जो अत्यन्त दुर्बल हो, बलात् उससे कुछ नहीं छीन सकते। उसे रिझाओ, क्योंकि उसे रिझाकर ही उससे कुछ लिया जा सकता है। उसे रिझाने के लिए, उसे कहीं अन्यत्र खोजने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह–**गुहा निषीदन्** = हृदय-गुफा में रहता है, वह सदा अपने पास रहता है। उसका इधर-उधर खोजना क्या? तभी तो **'विदन्तीमत्र नरो धियंधाः'** बुद्धिमान् ध्यानी मनुष्य उसे यहीं–हृदय में ही पा लेते हैं। जब रहता ही हृदय में है, तो वह वहाँ कैसे नहीं पाया जाएगा? उसे कैसे पाते हैं? **'हृदा यत्तष्टान्मन्त्राँ अशंसन्'**–जब हृदय से निकले मन्त्रों द्वारा वे स्तुति करते हैं। हृदय से जब तक आराधना न करोगे, तब तक न तो उसे पा सकोगे और न रिझा सकोगे, चाहे वह इतना समीप है। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

वैदिक भारत–कौशल भारत
आर्य महासम्मेलन 5 नवम्बर को नवांशहर में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में आगामी आर्य महासम्मेलन वैदिक भारत–कौशल भारत **5 नवम्बर 2017** रविवार को नवांशहर में करने का निश्चय किया गया है। इस अवसर पर उच्चकोटि के वैदिक विद्वान् वक्ता, सन्यासी, संगीतज्ञ एवं नेतागण पधारेंगे। कार्यक्रम की विस्तृत सूचना समय-समय पर आपको आर्य मर्यादा साप्ताहिक द्वारा मिलती रहेगी। इसलिए 5 नवम्बर 2017 की तिथि को कोई कार्यक्रम न रखकर पंजाब की सभी आर्य समाजें अधिक से अधिक संख्या में नवांशहर में पहुंच कर अपने संगठन का परिचय दें।

–प्रेम भारद्वाज
महामन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवे दिवे।
यशसं वीरवत्तमम्।। –ऋ० १.१.३

भावार्थ–परमेश्वर की उपासना करने से और उसकी वैदिक आज्ञा में रहने से ही मनुष्य, ऐसे उत्तम धन को प्राप्त होता है कि, जो धन प्रतिदिन बढ़ने वाला, मनुष्य की पुष्टि करने वाला और यश देने वाला हो। जिस धन से पुरुष, महाविद्वान् शूरवीरों से युक्त होकर, सदा अनेक प्रकार के सुखों से युक्त होता है, ऐसे धन की प्राप्ति के लिए ही उस भगवान् की भक्ति करनी चाहिये।

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि।
स इद् देवेषु गच्छति।। –ऋ० १.१.४

भावार्थ–धर्म रक्षक परमात्मा, जिस हिंसादि दोषरहित स्वाध्याय और अन्न, वस्त्र, पुस्तक विद्यादानादि यज्ञ की रक्षा करते हैं। वही यज्ञ संसार में फैल कर सबको सुखी करता है। इस वैदिक उपदेश से निश्चय हुआ कि जो हिंसक लोग, गौ, घोड़ा, बकरी आदि उपकारक और अहिंसक पशुओं को मारकर, उनकी चर्बी और मांस से यज्ञ का नाम लेकर होम करते व खाते हैं, यह सब उन हत्यारे याज्ञिक लोगों की स्व कपोल कल्पित लीला हैं, वेदों से इसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है।

हम धर्म के लक्षणों को ग्रहण करें

-ले. डॉ. अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

अथर्ववेद के द्वादश अनुवाक के पंचम सूक्त के प्रथम छः मन्त्रों में वेदवाणी की सत्यता तथा इसे पाने के लिए पुरुषार्थ करने की प्रेरणा देते हुए कहा गया है कि जो लोग इस वेदवाणी को नहीं पाते, उन्हें अपार कष्टों का सामना करना होता है। वेद इन मन्त्रों में उपदेश करते हुए कह रहा है कि-

श्रमेण तपसा सृष्टा ब्रह्मणा वित्तऋते श्रिता।।१।।

सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता।।२।।

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता

यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।।३।।

ब्रह्म पदवायं ब्राह्मणो-ऽधिपतिः।।४।।

तामाददानस्य ब्रह्मगवीं जिनतो ब्राह्मण क्षत्रियस्य।।५।।

अप क्रामति सूनृता वीर्यं१पुण्या लक्ष्मीः।।६।।

अथर्ववेद के द्वादश अनुवाक के पंचम सूक्त के अंतर्गत जो छः मन्त्र आरम्भ में दिए गए हैं, उनमें से प्रथम मन्त्र में इस प्रकार उपदेश किया गया है-

जो वेदवाणी प्रयत्न के साथ तथा तप के साथ उत्पन्न की गयी तथा ब्रह्मचारी बनकर पायी गई, वह वेदवाणी सत्यज्ञान में ठहरी हुई है। मन्त्र कह रहा है कि वेद ज्ञान सत्य ज्ञान है। यह सत्य पर ही आश्रित है तथा इसका आधार सत्य ही है। इससे यह तथ्य सामने आता है कि सत्य ज्ञान होने के कारण इस पर चलने वाला प्रत्येक व्यक्ति सत्य मार्ग का ही अनुगामी होता है, सत्य मार्ग पर ही चलने वाला होता है। सत्य मार्ग पर चलने वाले को सब प्रकार के सुख, सब प्रकार के धन तथा सब प्रकार के ऐश्वर्य मिलते हैं, क्योंकि वेदवाणी सत्य को अपने अन्दर समेटे हुए है, इस कारण इस वाणी का स्वाध्याय करने वाले, इस वाणी का अवलंबन करने वाले भी सत्य मार्ग के ही अनुगामी होते हैं। इसलिए उन्हें भी सर्वत्र सत्य पथगामी होने के कारण यश व कीर्ति मिलती है।

वेद पथ के पथिक का सर्वत्र सम्मान होता है, गुणगान होता है, यशोगान होता है। सत्य का आधार होने के कारण हमें पुरुषार्थ पूर्वक प्रयत्न करते हुए इस वेदवाणी को पाने का प्रयास करना चाहिए। इस वेद वाणी को पाने के लिए सब प्रकार का तप करना चाहिए। जब हम सच्चे मन से पुरुषार्थ करते हैं, जब हम सच्चे मन से मेहनत करते हैं, यत्न करते है, इसके लिए तप करते हैं तो हम इस सत्य ज्ञान को प्राप्त कर निश्चित ही अपने आप को धन्य करते हैं। इस से प्राप्त यश व कीर्ति के कारण सर्वत्र हमारे यश व कीर्ति की पताका लहराती है। इसलिए हम निरंतर व प्रयत्न पूर्वक वेदवाणी का स्वाध्याय करें। यदि हम ऐसा नहीं करते तो हमें जानने वाला भी कोई नहीं होगा।

स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में इन मन्त्रों का विस्तार से वर्णन करते हुए अर्थ इस प्रकार किया है-

महर्षि लिखते हैं कि इन मन्त्रों के अभिप्राय से यह सिद्ध होता है कि सब मनुष्यों को श्रमेण इत्यादि धर्म के लक्षणों का ग्रहण अवश्य करना चाहिए।

क्योंकि ईश्वर ने श्रम अर्थात् जो परम प्रयत्न करना, और तपसा अर्थात् जो धर्म का आचरण करना है, इसी धर्म से युक्त मनुष्यों को रचा है, इस कारण से ब्रह्मणा अर्थात् ब्रह्म-जो वेद विद्या और परमेश्वर के ज्ञान से युक्त हो के सब मनुष्य अपने अपने ज्ञान को बढ़ावें। ऋते श्रिता अर्थात् सब मनुष्य ऋत् जो ब्रह्म, सत्य विद्या और धरमाचरण इत्यादि शुभगुणों का सेवन करें।

इस सूक्त का दूसरा मन्त्र हमें इस प्रकार उपदेश कर रहा है :

सत्येनावृता श्रिया प्रावृता यशसा परीवृता।।२।।

मन्त्र कह रहा है कि यह वेदवाणी सत्य पर आश्रित होने के कारण सत्य से आकूत होने के कारण सब प्रकार से स्वीकार की गयी है। चक्रवर्ती राजा के द्वारा, जो अनेक प्रकार की लक्ष्मियों का स्वामी होता है, इस प्रकार के राजा ने भी इसे अंगीकार किया है। यश व कीर्ति का कारण होने के कारण सब ओर से माननीय बन गई है।

प्रथम मन्त्र में ही बताया गया था कि यह वेदवाणी सत्य होती है। सत्य का सब लोग आदर-सत्कार करते हैं। इस कारण यह यश और कीर्ति का कारण होती है। इस तथ्य को ही आगे बढ़ाते हुए यह मन्त्र कह रहा है कि वेदवाणी का आधार सत्य होता है। यह सत्य पर ही आश्रित होती है। यह वाणी सदा सत्य से ही सम्बन्ध रखती है। यह वाणी सदा सत्य से ही आकूत होती है, सराबोर होती है, सत्य से ही लबालब भरी रहती है। सत्य का भण्डार होने के कारण ही सब ओर तथा सब लोग इसे स्वीकार करते हैं तथा इस के अनुरूप ही अपने सब कार्य व्यवहार करते हैं।

सत्य पर चलना ही यश व कीर्ति का कारण होता है। अतः जो लोग इस वेदवाणी के अनुरूप अपने सब क्रिया कलाप करते हैं, वह यश व कीर्ति का भण्डार पाने में सदा सफल होते हैं। चक्रवर्ती राजा, जिस ने अनेक प्रकार की रश्मियों को पा लिया होता है, अपार धन का स्वामी होता है, भी इसे पाकर ही यह सब उपलब्धियों को पाने का अधिकारी बनता है। यदि उसने वेद के सत्य को ग्रहण नहीं किया तो वह अपने राज्य का विस्तार नहीं कर सकता, उसकी प्रजा उसका कभी गुणगान नहीं करती। यह सब सत्कार तो उसे वेदवाणी को ग्रहण करने पर ही मिलता है तथा वेदवाणी के कारण ही वह चक्रवर्ती राज्य का अधिकारी हुआ है। यदि वह वेद के आधार को त्याग देता है तो यह सब कुछ उससे दूर हो जाता है।

यह वेद का ज्ञान ही है, जिससे उसे सब प्रकार की सफलताओं का मार्ग मिलता है। वेद के सत्य मार्ग पर चलने से जो यश उसे मिलता है, जो कीर्ति उसे मिलती है, उस यश व कीर्ति के कारण ही संसार के सब राजा लोग, संसार की सब प्रजा उसे अत्यधिक सम्मान देती है। उस के मार्ग पर अपनी पलकें बिछा देती है। इस प्रकार उसकी कीर्ति भी दूर दूर तक चली जाती है। यदि वह इस पवित्र वाणी को ग्रहण नहीं करता तो उसे इस सब से हाथ धोना होता है।

इस मन्त्र के सम्बन्ध में ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में स्वामी जी इस प्रकार लिखते हैं:

सत्येनावृता अर्थात् सब मनुष्य प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सत्य की परीक्षा करके सत्य के आचरण से युक्त हों। श्रिया प्रावृता अर्थात् हे मनुष्य लोगो ! तुम शुभ गुणों से प्रकाशित हो के, चक्रवर्ती राज्य आदि ऐश्वर्य को सिद्ध करके, अति श्रेष्ठ लक्ष्मी से युक्त हो के, शोभारूप श्री को सिद्ध करके, उसको चारों ओर पहिन के शोभित हों, यशसा परी, अर्थात् सब मनुष्यों को उत्तम गुणों का ग्रहण करके सत्य के आचरण और यश अर्थात् उत्तम कीर्ति से युक्त होना चाहिए।

इस सूक्त के तृतीय मन्त्र में उपदेश देते हुए मन्त्र कह रहा है कि :

स्वधया परिहिता श्रद्धया पर्यूढा दीक्षया गुप्ता

यज्ञे प्रतिष्ठिता लोको निधनम्।।३।।

अपनी धारण शक्ति के कारण वेदवाणी सब ओर धारण की गई है। जो ईश्वर के प्रति श्रद्धा, ईश्वर के प्रति विश्वास ही, उसके कारण यह दृढ़ता का कारण बनी है। दीक्षा रूपी जो नियम हीन, जो व्रत होते है तथा जो संस्कार होते हैं, उन सब से यह रक्षित होती है। जो विद्वानों का सत्कार होता है, जो उनकी शिल्प विद्या होती है तथा जो उनके शुभ गुणों का दान होता है, इसे यज्ञ कहते है तथा यह वेदवाणी ऐसे कार्यों में ही प्रतिष्ठा व सम्मान का कारण होती है। यह संसार ही इस वेदवाणी का स्थिति स्थान है। इस आलोक में मन्त्र हमें उपदेश कर रहा है कि वेदवाणी सत्य पर आश्रित होने के कारण अपार धारण शक्ति इस के पास होती है। इस शक्ति के कारण ही हम इसे धारण करते हैं, ग्रहण करते हैं। यह दृढ़ता आने का कारण है इस वेदवाणी के कारण हमारे अन्दर अपार ईश्वर के विश्वास का होना। ईश विश्वास ही इसे धारण करता है तथा ईश विश्वास से ही हम इसे धारण करते हैं। यह ईश विश्वासी को ही प्राप्त होती है। दीक्षा रूपी बहुत से नियम तथा बहुत से संस्कार होते हैं। जिस के पास यह नियम होते हैं अर्थात् जो व्यक्ति इन नियमों के अनुसार इस प्रकार के संस्कार अपने अन्दर पैदा कर लेता है यह वेद वाणी उस में ही जा कर स्थापित हो जाती है। इन व्रतों से ही यह रक्षित होती है। यह वेदवाणी सब प्रकार के यज्ञों में प्रतिष्ठा का सन्मान का कारण होती है। विद्वान् लोग प्रयत्न पूर्वक अनेक प्रकार के व्रत धारण करते हैं, प्रतिज्ञाएं लेते हैं अनेक प्रकार की शिल्प विद्या के स्वामी बनते हैं तथा अनेक प्रकार के शुभ गुणों का दान करने से ही वह इसे पाने के योग्य बनते हैं। वेदवाणी इस प्रकार के लोगों को सन्मान देने का कारण होती है अर्थात् जो लोग इस प्रकार की क्रियाएं करते हैं, यह वेदवाणी उनका यश व कीर्ति दूर-दूर तक ले जाती है। इसलिए हमें सदा प्रयत्न पूर्वक वेदवाणी को पाने का यत्न करना चाहिए।

ऋग्वेद आदि भाष्य भूमिका में स्वामी जी ने इस मन्त्र पर इस प्रकार प्रकाश डाला है :

सब प्रकार से मनुष्य लोग स्वधा अर्थात् अपने ही पदार्थों का धारण करें। इस अमृत रूप व्यवहार से सदा युक्त हों श्रद्धया पर्य्यूढा अर्थात् सब लोग सत्य व्यवहार पर अत्यंत विश्वास को प्राप्त हों, क्योंकि जो

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

मातृभाषा हिन्दी का महत्त्व

प्रतिवर्ष हमारे देश में 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है क्योंकि 14 सितम्बर 1949 के दिन भारत की संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया था। स्वाधीनता के संघर्ष के समय हिन्दी के प्रचार को स्वराज्य प्राप्ति के समान ही महत्त्व दिया जाता रहा था और सभी स्वाधीन देश अपना राजकाज अपनी देश की भाषा में करते हैं परन्तु खेद है कि आज भारत देश की अपनी राष्ट्रभाषा हिन्दी के होते हुए भी उसके स्थान पर अंग्रेजी भाषा को ज्यादा महत्व देते हैं। स्वतन्त्रता से पूर्व हिन्दी भाषा सशक्त थी, बेचारी नहीं। इसी के बल पर रावलपिंडी से लेकर ढ़ाका तक स्वतन्त्रता आन्दोलन चला। आजादी के इस महा आन्दोलन में हिन्दी भाषा ने ही देश को जोड़ने का काम किया। आज भी देश के अधिकांश भागों में हिन्दी भाषा बोली और समझी जाती है। इसलिए 14 सितम्बर को संविधान का निर्णय राष्ट्र की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण था। इस महत्त्व के कारण इस दिवस को देश भर में विभिन्न संस्थाएं हिन्दी दिवस के रूप में मनाती हैं। स्वतन्त्रता के पश्चात उम्मीद थी कि हिन्दी भाषा को उसका उचित स्थान मिलेगा परन्तु कुछ विकृत मानसिकता के शिकार लोगों ने स्वतन्त्रता के पश्चात भी हिन्दी भाषा का विरोध किया। संविधान में तो राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया गया परन्तु यह दर्जा वास्तविकता से कोसों दूर है। आज आवश्यकता हिन्दी दिवस को मनाने की नहीं, हिन्दी को अपनाने की आवश्यकता है। जब तक हिन्दी भाषा को व्यवहार में नहीं अपनाएंगे तब तक हिन्दी दिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस मनाने से इसकी उन्नति नहीं हो सकती।

मातृ सभ्यता, मातृभाषा और मातृभूमि के गौरव को प्रदर्शित करने वाला ऋग्वेद में एक प्रसिद्ध मन्त्र आया है-

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीः मयोभुवः।।
बर्हिः सीदन्तु अस्रिधः।।

इस मन्त्र में मातृसभ्यता, मातृभाषा और मातृभूमि इन तीनों को गौरव प्रदान करते हुए देवी कहकर सम्बोधित किया गया है। मन्त्र में कहा गया है कि यदि राष्ट्र का उत्थान करना चाहते हो तो इन तीनों देवियों को घर-घर में प्रकाशित करो। इनके प्रकाश से ही राष्ट्र का प्रकाश है। इनकी उन्नति से ही राष्ट्र की उन्नति है। इनके विकास से ही राष्ट्र का विकास है। किसी भी राष्ट्र का आधार उसकी संस्कृति, सभ्यता, मातृभाषा और मातृभूमि के प्रति अपनत्व और प्रेम की भावना होती है। जब राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक इनके ऊपर गर्व करता है तब राष्ट्र का गौरव बढ़ता है। परन्तु हमारे देश का दुर्भाग्य है कि हमारे देश में इन तीनों देवियों का अनादर है। हमारी लम्बी दासता का सबसे भयंकर दुष्परिणाम यह हुआ कि हम मातृ संस्कृति, मातृभाषा और मातृभूमि के लिए जो आदर और श्रद्धा होनी चाहिए , उससे शून्य हो गए। यह सब विनाश अंग्रेजी शिक्षा के कारण हुआ। अंग्रेजों का शासन हमारे देश की संस्कृति, सभ्यता, मातृभाषा रूपी उपवन के लिए आँधी के समान ही था जिसने हृदय और मस्तिष्क की भूमि में से श्रद्धा और आस्था की जड़ों को उखाड़ कर फैंक दिया।

आर्य समाज और हिन्दी भाषा

आर्य समाज हमेशा हिन्दी भाषा का पक्षधर रहा है। हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए आर्य समाज ने अनेकोंआन्दोलन किए। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 के आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी। महर्षि दयानन्द जन्मना गुजराती थे और उनकी सारी शिक्षा दीक्षा संस्कृत में हुई थी। आरम्भ में महर्षि संस्कृत में ही भाषण और लेखन कार्य किया करते थे। प्रचार के लिए जब कलकत्ता पधारे तो वहां भी संस्कृत में ही भाषण दिए जिसका अनुवाद दूसरे विद्वान् किया करते थे। बाबू केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि साधारण जनता तक अपने विचार पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना चाहिए। इसके पश्चात भारतीय जनता की एकता की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि की इन भावनाओं और देश की एकता का ध्यान रखते हुए आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार का भरपूर प्रयास किया। न केवल अपने मौखिक प्रचार, लेखन कार्य, पत्र-पत्रिकाओं और दूसरे साहित्य के माध्यम से हिन्दी को हर प्रकार से बढ़ावा दिया। इस प्रकार अपने पिछले इतिहास में आर्य समाज हिन्दी भाषा के प्रचारक, सहायक और संरक्षक के रूप में सामने आया।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का मानना था कि राष्ट्रभाषा या राजभाषा वही भाषा बन सकती जिसमें निम्नलिखित गुण हों-जिसे देश के अधिकांश निवासी समझते हों, वह सरल हो, वह क्षणिक या अस्थाई हितों को ध्यान में रखकर न चुनी गई हो, उसके द्वारा देश का परस्पर धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार सम्भव हो सके और सरकारी कर्मचारी उसे सरलता से सीख सके। गांधी जी का दृढ़ विश्वास था कि समस्त भारतीय भाषाओं में केवल हिन्दी ही ऐसी भाषा है जिसमें उपर्युक्त सभी गुण विद्यमान हैं।

हिन्दी दिवस के अवसर पर जहां विविध प्रकार के कार्यक्रम आयोजित हों, वहां शासकीय, शैक्षणिक, व्यापारिक क्षेत्रों में हिन्दी के अधिक प्रयोग के विषय में चर्चा अनिवार्य रूप से होनी चाहिए। तभी उस दिन की सार्थकता है। इन चर्चाओं के आधार पर अगले वर्ष के लिए ठोस एवं क्रमबद्ध कार्यक्रम भी बनाएं जाने चाहिए। आज हम हिन्दी दिवस के अवसर पर कार्यकम आयोजित करते हैं, वक्ता हिन्दी के महत्त्व पर प्रकाश ड़ालते हैं परन्तु व्यवहार में परिणाम शून्य है। लोग अपने घरों के बाहर नेमप्लेट अंग्रेजी में लगाते हैं, विवाह आदि कार्यक्रमों के निमन्त्रण पत्र अंग्रेजी में छपवाते हैं, अंग्रेजी बोलने में गौरव अनुभव करते हैं। हिन्दी भाषा का प्रचार तब तक सम्भव नहीं है जब तक हम अपने व्यवहार में हिन्दी को नहीं अपनाते। केवल साल में एक बार हिन्दी दिवस मना लेने से हिन्दी का प्रचार नहीं होगा। जिस स्वाधीनता संग्राम को भारतीय भाषाओं ने लड़ा, स्वाधीनता मिलते ही उन्हें दरकिनार कर दिया गया। स्वाधीनता के सारे दस्तावेज ही केवल अंग्रेजी में हस्ताक्षरित किए गए।

इस वर्ष हिन्दी दिवस के अवसर पर हम यह संकल्प करें कि अपने सभी कार्यों में हिन्दी को प्राथमिकता देंगे। स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसार ने बड़े भारी मन से यह कहा था कि कोई देश विदेशी भाषा द्वारा न तो उन्नति कर सकता है, न ही राष्ट्रभावना की अभिव्यक्ति कर सकता है। इसलिए हम राष्ट्र की उन्नति और अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए हिन्दी को अपनाएं। केवल हिन्दी दिवस मना लेने से हम कर्त्तव्य को पूर्ण नहीं कर सकते। जब से हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार किया गया है तभी से हम हिन्दी दिवस मनाते चले आ रहे हैं परन्तु क्या हिन्दी को वह सम्मान और स्थान प्राप्त है जो उसे राष्ट्रभाषा के रूप में मिलना चाहिए था। अगर हमें वास्तव में अपनी मातृभाषा, राष्ट्रभाषा हिन्दी से प्रेम है तो हमें उसके उत्थान के लिए रचनात्मक और ठोस कार्य करना होगा जिससे हम हिन्दी को उसका गौरव प्रदान कर सके।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

क्या वेद में आर्य एवं आदिवासियों के युद्ध का वर्णन है?

-ले० शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

(गंताक से आगे)

मिनन्ता दस्योरर्शिव रस्य माया।

ऋ. 1.117.3.

इस मंत्र में दस्यु का विशेषण है अशिव अर्थात् कल्याण न करने वाला। यह हानि पहुंचाने वाले के लिए आया है।

यहां पर दस्यु का अर्थ है विनाशकारी।

आर्य एवं दास, दस्यु को जान लेने के बाद अब हम आदिवासियों के धर्म और स्वरूप पर विचार करते हैं और कीथ द्वारा रचित वैदिक इण्डैक्स में कहा गया है-ऋ. 5.29.10. में दासों को 'अनास' कहा गया है जिससे पता चलता है कि वे वस्तुतः मनुष्य थे। इस व्याख्या से चपटी नाक वाले द्राविड़ आदिवासियों को लिया जा सकता है फिर ऋ. 5.29.10. मंत्र में उन्हें मृध्रवाच् भी कहा गया है। इसका अर्थ है द्वेष पूर्ण वाली वाले अथवा लड़ाई के बोल बोलने वाले।

अनासो दस्यूंरमृणो वधेन निदुर्योण आवृणङ् मृध्रवाचः।

-ऋ. 5.29.10.

इस मंत्र का अर्थ करते हुए वैद्य रामगोपाल लिखते हैं-हे इन्द्र, तूने 'अनास' अर्थात् (मूक मेघ) और (मृध्र वाच्) हिंसित गर्जन करने वाले मेघ (दस्यु) अर्थात् विनाश-कारी मेघों को संग्राम में वज्र द्वारा मारा।

इस सूक्त का देवता इन्द्र है। इस सूक्त में इन्द्र (विद्युत्) और मेघ का प्राकृतिक संघर्ष दर्शाया गया है। इस मंत्र में 'नास्' का अर्थ नासिका नहीं प्रत्युत 'नास' का अर्थ है शब्द करना। नासते शब्दं करोति इतिनाः। (नास्) अर्थात् जो शब्द करता है वह नास् है। 'न शब्द' करोति इति अनाः (अनास्) जो मेघ शब्द नहीं करते वे अनास्।

ग्रिफथ ने ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद करते हुए। ऋ. 1.10.1. की टिप्पणी में लिखा है-काले वर्ण के आदिवासी जो आर्यो का विरोध करते थे। मैकडोनल ने लिखा है-दास, दस्यु काले रंग के आदिवासी ही है। अपने कथन के प्रमाण में यह बताने के लिए कि आदिवासियों की त्वचा कृष्ण (काली) थी निम्न 6 मंत्र दिये हैं :

यः कृष्ण गर्भा निर हन्नृजिश्वना। **ऋ. 1.101.1.**

त्वचं कृष्णा मरन्धयत्।

ऋ. 1.130.8.

स वृत्रहेन्द्रः कृष्ण योनीः।।

ऋ. 2.20.7.

पञ्चाशत् कृष्ण नि वपः।।

ऋ. 4.16.13.

कृष्णा असेधदप सद्मनो जाः।

ऋ. 6.47.21.

त्वद्भिया विश आयन्नसिक्नीः।

ऋ. 7.5.3.

पाश्चात्य मत वालों ने इन मंत्रों से यह सिद्ध करने का यत्न किया है कि आदिवासी काली त्वचा वाले थे। उनकी यह कल्पना निराधार है। ये मंत्र मनुष्य सम्बन्धी नहीं है।

मंत्र 1.101.1 में जो कृष्ण गर्भाः पद आया है वह मेघ की काली घटा सम्बन्धी है। कृष्ण वर्ण मेघ जिन घटाओं के गर्भ में हैं वे घटाएं ही यहां पर कृष्ण गर्भाः कही गई हैं। त्वंचं कृष्णामरन्धयत्। ऋ. 1.130.8. में भी कृष्ण त्वचा वाला कोई आदिवासी नहीं है। यहां इन्द्र (विद्युत्) का कृष्ण वर्ण मेघ के साथ युद्ध का वर्णन है। इससे पूर्व के मंत्र में शम्बर नामक मेघ का वर्णन है जिसके 99 पुर अर्थात् घटाओं को इन्द्र तोड़ना है। इसलिए जान-बूझ कर अथवा अज्ञान से यह लिख देना कि यहां कृष्ण वर्ण आदिवासियों का वर्णन है सर्वथा निराधार है।

तृतीय मंत्र 2.20.7. में कृष्ण योनीः पद को देखकर पाश्चात्य मत वालों को भ्रान्ति हुई है। इस मंत्र में भी कृष्ण योनीः पद दासी का विशेषण है। यहां पर दासी का अर्थ मेघ की विनाशकारी घटाएं हैं।

चतुर्थ मंत्र में भी इन्द्र और मेघ के युद्ध का वर्णन है। इस मंत्र में पिप्रु तथा मृगय नाम वाले मेघों का वर्णन है। पांचवें मंत्र में कृष्णा का अर्थ रात्रि तथा छठे मंत्र में इसका अर्थ अंधेरी रात्रि है। वैदिक इन्डेक्स के लेखकों ने लिखा है कि 'सम्भवतः' लिङ्ग पूजक भी इन्हें को कहा गया है। ऋ. 7.21.5 तथा 10.93.3. यह ध्यान देने योग्य है कि आर्यो और दासों या दस्युओं के धर्म के अन्दर पर बल दिया गया है। पाश्चात्य लोगों ने सिद्ध करने का प्रयत्न भी किया है कि दस्यु दास (आदिवासियों) को वेद में अकर्मन, अदेवयु, अब्रह्मण अयज्वन, अव्रतः आदि आदि लिखा है।

परन्तु वास्तव में पाश्चात्य मान्यता वालों की यह धारणा भी निराधार है। शिश्नदेवा पद को देखकर उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि आदिवासी लिङ्ग पूजक थे। इनका यह अर्थ भ्रम मूलक है कि शिश्नेदेवाः का अर्थ है कि जो लिङ्ग इन्द्रियक्रीड़ा में रत है इस प्रकार के व्यभिचारी कामी भोगी व्यक्ति को वेद में 'शिश्नदेवाः' कहा गया है। यास्का चार्य ने शिश्नदेवा का अर्थ अब्रह्मचारी किया है। ऋ. 7.21.5 तथा 10.93.3. में शिश्नदेवा शब्द व्यभिचारी के लिए आया है। पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार आदिवासियों के विशिष्ट व्यक्ति शम्बर, चुमुरि, धुनिः पिप्रुः वर्चिन इलीविश आदि है।

मैकडानल और कीथ की यह मान्यता भी निराधार है। वेद में शम्बर, चुमुरि, धुनिः पिप्रुः वर्चिन इलीविश आदि सब मेघों के भेद है। इन्द्र और शम्बर आदि का जो युद्ध है वह आकाश में विद्युत और मेघों का प्राकृतिक संघर्ष है। आदिवासी पुरूषों से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है। यास्काचार्य ने स्पष्ट लिखा है-

अपांज्योतिषश्च मिश्री भाव कर्मणो वर्ष कर्म जायते।

तत्रोपमार्येन युद्ध वर्णा भवन्ति। **नि. 2.16.**

यास्काचार्य वेदों के आन्तरिक स्वरूप को जानते थे इसलिए उन्होंने इसे प्राकृतिक युद्ध सिद्ध किया परन्तु पाश्चात्य मत वालों ने इन्हें आदिवासी सिद्ध करने का प्रयत्न किया।

अब हम कुछ तथा कथित आदिवासी नामों पर विचार करते हैं।

ऋ.1.59.6 में शम्बर शब्द आया है। जाने कि यह शम्बर क्या है?

प्र नू महित्वं वृषभस्य वोचं यं पूखो वृत्रहणं सचन्ते।

वैश्वानरो दस्युमग्निर्जघन्वां अधूमोत् काष्ठा अब शम्बरं भेत्।।

अर्थ-मनुष्य जिस वृत्रहन्ता वैश्वानर अग्नि की वर्षा के लिए प्रार्थना करते हैं, उसी वैश्वानर अग्नि के महात्म्य को मैं कहता हूँ। उसी वैश्वानर अग्नि ने दस्यु (अवर्षण द्वारा प्रजा का उत्पीड़क मेघ) का हनन किया, जलों को कम्पित गतिशील किया और शम्बर मेघ के टुकड़े कर दिए।

-चुमुरि-

स यो न मुहे मिथू जनो भूत् सुमन्तनामा चुमुरिं धुनिं च।

वृणक्पिप्रुं शम्बरं शुष्णमिन्द्रः पुरां च्यौत्नाय शयथाय न चित्।

ऋ. 6.18.8.

अर्थ-जो इन्द्र संग्राम में कभी भी कर्त्तव्य विमूढ़ नहीं होता है, जो कभी भी वृथा वस्तुओं को उत्पन्न नहीं करता किन्तु जो प्रख्यात नाम वाला है वहीं इन्द्र शत्रुओं के नगरों को विनष्ट करने के लिए और शत्रुओं को मारने के लिए शीघ्र ही कार्यरत होता है। हे इन्द्र। तुमने चुमुरि, धुनि, प्रिप्रु, शम्बर और शुष्ण नामक मेघों को विनष्ट किया इस मंत्र में चुमुरि एक मेघ का नाम है। धुनि, प्रिप्रु, शम्बर शुष्ण नाम के भी मेघों के प्रकार हैं जिन्हें इन्द्र (विद्युत्) अपनी वायु से आवेष्टित तरंगो द्वारा छिन्न-भिन्न कर देता है।

-वर्चिन-

इन्द्राविष्णू दृंहिताः शम्बर-स्यनव पुरो नवतिचश्नष्टम्।

शतं वर्चिनः सहस्त्रं च साकं हथो अप्रत्य सुरस्य वीरान्।।

ऋ. 7.99.5.

अर्थ-हे इन्द्र और विष्णु। तुमने शम्बर की 99 दृढ़ पुरियों को नष्ट कर दिया है। तुमने वर्चिन् नामक आसुर (मेघ) के सौ और हजार वीरों को नष्ट कर दिया है।

जिस मेघ में विद्युत बहुत चमकती है वह वर्चिन् नामक मेघ है यहां वर्जित का विशेषण असुर है। वर्जिन मेघ की सहस्त्रों टुकड़ियां ही वर्जिन् मेघ के वीर है। शम्बर भी एक मेघ ही है जिसकी 99 घटाओं को इन्द्र और विष्णु नष्ट करते हैं। इन्द्र विद्युत है और विष्णु सूर्य है।

-इलीबिश-

न्याविध्यदिलीबिशस्य दृऽहा विशृङ्गिणमभिनच्छुष्णमिन्द्रः।

यावत्तरो मघवन यावदोजो वज्रेण शत्रुमवधीः प्रतन्युम्।।

ऋ. 1.33.12.

इलिबिश नामक मेघ के दृढ़ जल रोधक बन्धनों को इन्द्र नष्ट करता है। तदन्तर उस मेघ के उन्नश्रृगों अर्थात् उन्नत घटाओं को तोड़ कर शोषण कर्ता मेघ का नाश करता है। हे इन्द्र! तूने अपने वेग ओज के आश्रय से वज्र द्वारा युद्धाकांक्षी शत्रु को मारा है।

यास्काचार्य ने इस मंत्र की व्याख्या में लिखा है इलिबिश शयः अर्थात् भूमि के बिलों में सोने वाला। जिस समय भूमि पर वृष्टि द्वारा जल आता है तो भूमि में प्रवेश कर जाने से इसे इलिबिश कहते है।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

गुरूकुल हरिपुर में श्रावणी उपाकर्म व अष्टम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ सम्पन्न

नुआपडा जिला में स्थित गुरूकुल हरिपुर जुनानी में श्रावणी पर्व के अवसर पर सात अगस्त को गुरूकुल में नूतन प्रविष्ट तीस ब्रह्मचारियों का उपनयन, वेदारम्भ तथा विद्याव्रत संस्कार, एक आदर्श गृहस्थी द्वारा वानप्रस्थ की दीक्षा से दीक्षित होना आदि कार्यक्रम के साथ यज्ञ एक समाधान अनेक विषयक ब्रह्मचारियों का सांस्कृतिक कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद प्रदान करने खरियाररोड, नुआपडा एवं ओडिशा के विभिन्न जिलों से पांच सौ के लगभग महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर पूर्णिमा ०७ अगस्त से २२ अगस्त पर्यन्त पर्यावरण प्रदूषण समस्या, ग्लोबल बार्मिंग की समस्या, अनावृष्टि-अतिवृष्टि तथा असाध्य रोगों से आज का समाज बचे एवं विश्वशान्ति व राष्ट्र रक्षा निमित्ति गुरूकुल द्वारा सोलह दिवसीय चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग एक क्वि. शुद्ध गाय घी एवं विभिन्न औषधियों से निर्मित लगभग डेढ़ क्वि. हवन सामग्री से आहुतियां दी गई। सोलह दिनों तक चलने वाला इस महायज्ञ के कार्यकरम में श्रीमती विनोदिनी पण्डा, श्री सोमनाथ पात्र, श्री विनोद जायसवाल, श्री प्रसन्न कुमार पाढ़ी इत्यादि गणमान्य सज्जन उपस्थित हुये।

कार्यक्रम की विशेषता यह थी कि नियमित नुआपडा, खरियाररोड एवं विभिन्न गाँव से धर्म प्रेमी सज्जनगण उपस्थिति होकर यज्ञ में आहुति प्रदान कर यज्ञ भगवान् से आशीर्वाद लेते थे। इसी प्रकार विगत सात वर्षों से यह चतुर्वेद पारायण महायज्ञ गुरूकुल भूमि में आयोजित हो रहा है।

यह समस्त कार्यक्रम गुरूकुल के संचालक डॉ. सुदर्शनदेव आचार्य जी के प्रत्यक्ष सान्निध्य व मार्गदर्शन तथा गुरूकुल के आचार्य दिलीप कुमार जिज्ञासु के ब्रह्मत्व में एवं श्री राजेन्द्र कुमार वर्णी व गुरूकुल के समस्त अधिकारीगणों के पुनीत सहयोग से व ईश्वर की असीम दया से निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

अश्विन मास सक्रांति के उपलक्ष्य में हवन यज्ञ का आयोजन

दिनांक 16-09-2017 दिन शनिवार महर्षि दयानन्द मठ (वेद मन्दिर) ढन्न मुहल्ला जालन्धर में हवन यज्ञ का आयोजन हर मास की भ्रांति श्रद्धापूर्वक किया गया। यज्ञ ब्रह्मा श्री सुरेश जी शास्त्री (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) ने याज्ञिक महानुभावों से वैदिक मंत्रोंचारण श्री अरूण कोहली जी सप्तनीक एवं श्री आर. के. अरोड़ा जी ने बहुत ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ किया एवं यज्ञ ब्रह्मा जी तथा सभी गणमान्यों से अशीर्वाद लिया यज्ञपरोत यज्ञ प्रार्थना तथा एक भजन श्रीमति सीमा अनमोल जी ने गाकर संगत को प्रभु के साथ जोड़ने की सफल कोशिश की। उसके उपरान्त श्री सुरेश जी शास्त्री ने अपने मुखारविन्द से आशिवन संक्राति तथा माता पिता की सेवा बारे सारी संगत को बताकर इस पर चलने के लिये प्रेरित किया। प्रसाद वितरण एवं शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। श्री यशपाल जी 'आर्य' के परिवार की तरफ से बढ़िया नाश्ते का प्रबन्ध किया गया। इस अवसर पर श्री कुन्दन लाल जी अग्रवाल, श्री रवि भूषण मितल, श्री सत्यशरण गुप्ता जी अरूण कोहली, श्री राजिन्द्र देव विज, श्री ओ३म् प्रकाश गुप्ता जी, श्री प्रेम प्रकाश मोगला सहित कई गणमान्य लोग पधारे।

आर्य समाज हबीबगंज का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) का वार्षिक उत्सव 27, 28, 29 अक्तूबर 2017 को बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस वार्षिक उत्सव पर आर्य समाज के मूर्धन्य संन्यासी और उच्च कोटि के विद्वान पधार रहे हैं। इसलिये सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से निवेदन है कि इस अवसर पर धार्मिक लाभ उठावें। **-मंत्री आर्य समाज**

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

पृष्ठ 4 का शेष-क्या वेद में आर्य...

-पिप्रुः-

वि पिप्रोरहिमायस्य दृडहा पुरो वज्रिञ्छबसा न दर्दः।
सुदामन् तद्रेक्णो अप्रमृष्य-मृजिश्र्वने दात्रं दाशुषे दाः।
ऋ. 6.20.7.

अर्थ-हे इन्द्र! तूने सर्पाकार विप्रु मेघ के दृढ़ पुरों को बल से विदारण किया और हे शोभनदाता इन्द्र! तू ऋजिस्वा अर्थात् ऋज्वादित गुण वर्धक दानी पुरूष के लिए देने योग्य धन को देता है। इस मंत्र में आया पिप्रु भी इस प्रकार का मेघ है।

अब हम आर्य एवं आदि वासियों के मध्य युद्ध का विषय लेते हैं।

अब आर्यों और आदिवासियों के मध्य हुए युद्ध पर विचार करते हैं। पाश्चात्य विद्वानों की यह मान्यता भी भ्रान्तिपूर्ण है कि वेद में आर्य एवं दासों के मध्य हुए युद्धों का वर्णन है। वेद में प्राकृतिक संघर्ष का वर्णन है। जैसे इन्द्र और वृत्र। वेद में इन्द्र (विद्युत्) को आर्य कहा गया है और वृत्र (मेघ) को दास तथा दस्यु कहा गया है।

अपां बिलमपिहितं यदासीद् वृत्रंजघन्वां अप तद्ववार।
ऋ. 1.32.11.

अर्थात् जलों द्वारा भरा हुआ स्थान, वृत्र द्वारा ढका हुआ था। इन्द्र ने वृत्र का वध किया और उस ढके हुए स्थान से जल को बाहर निकाल दिया। यास्काचार्य ने इसी मंत्र के पहले निरूक्त में लिखा है-वृत्र कौन है? यह मेघ है ऐसा निरूक्तकार का पक्ष है। त्वष्टा का पुत्र असुर है यह ऐतिहासिक प्रश्न है। आपों (जल) और ज्योतियों (विद्युत्) के संघर्ष से वर्षा की क्रिया होती है। ऐसे प्रकरणों में उपमा से मंत्रों में युद्धों का वर्णन है। वेद व्याख्याकार यास्काचार्य ने ऋ. 1.32 सूक्त के आधार पर इन्द्र वृत्र युद्ध को प्राकृतिक माना है। अब हम दो मंत्र देकर विषय को विराम देंगे।

इन्द्रस्य नुवीर्याणि प्रवोचां यानि चकार प्रथमानी वज्री।
अहन्नहिमन्वपस्ततर्द प्र वक्षणा अभिनत् पर्वतानाम्। ऋ. 1.32.1.

व्रजधारी इन्द्र ने जो प्रथम बल के काम किये हैं उनका मैं वर्णन करता हूँ। प्रथम उसने अहि नामक मेघ का हनन किया। दूसरा वृष्टि का प्रबन्ध किया। तीसरा काम उसने प्रवहणशील पर्वतीय नदियों का मार्ग बनाया।

अहन्नहिं पर्वते शिश्रियाणं त्वष्टास्मै वज्रं स्वर्यं ततक्ष।
बाश्राइव धनेवः स्यन्दमाना अञ्जः समुद्रभव जग्मुरापः।।2।।

पर्वत में आश्रय लेने वाले अहि नाम मेघ का इन्द्र में वध किया। त्वष्टा ने इन्द्र के लिए शब्दकारी और उपतापकारी वज्र का निर्माण किया। जिस प्रकार अभिनव प्रसून गौएं अपने बछड़ों के प्रति जाती हैं, उसी प्रकार मेघ वध के अनन्तर धारावाही जल वेग से समुद्र की ओर गए।

इस लेख से पाठक समझ गए होंगे कि आर्य लोग इस देश में कहीं दूसरे देश से नहीं आए हैं तथा वास्तव में आर्य कोई मानव समाज की नस्ल विशेष नहीं है। श्रेष्ठ पुरूष को ही आर्य कहा जाता है। दास अथवा दस्यु भी मनुष्य की कोई विशेष नस्ल नहीं है। मूर्ख अकर्मण्य, अयज्ञशील लोगों को दास कहा जाता है। वेद में आर्य और अनार्यो के किसी भी युद्ध का वर्णन नहीं है। पाश्चात्य लोगों ने भारत में फूट डालो और राज्य करो की नीति अपना कर कपोल कल्पित कहानियों का आश्रय लिया है।

शिक्षक दिवस मनाया

दयानन्द पब्लिक स्कूल में शिक्षक दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस दिन महान शिक्षाविद् जो स्वतन्त्र भारत के दूसरे राष्ट्रपति बने डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् को पुष्प अर्पित किए गए। डॉ० राधाकृष्णन् ने अपना जन्म दिवस शिक्षक दिवस के रूप में मनाने का निर्णय किया था। स्कूल के बच्चों ने अपने अध्यापकों के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उन्हें गुलाब के फूल भेंट किए। बच्चों ने आज एक दिन के लिए अध्यापक बनकर उनका कार्यभार संभाला। प्रिंसीपल मैडम की तरफ से सभी अध्यापकों को सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि एक शिक्षक चाहे स्वयं बुलंदियों पर नहीं पहुंच पाता लेकिन अपने शिष्य को बुलंदियों पर ले जाने में वह गर्व महसूस करता है। स्कूल की प्रबंधकीय कमेटी के पदाधिकारी श्री गोपाल कृष्ण अग्रवाल, मनीश मदान, सतपाल नारंग जी से प्रिंसीपल मैडम ने सभी शिक्षको को इस दिवस की बधाई दी एवं अपना काम लगन, मेहनत एवं ईमानदारी से करने के लिए प्रेरित किया।

वेद-विहार

अथर्ववेदाधिकरण

-ले० स्वर्गीय श्री शान्ति स्वरूप गुप्त

(गंताक से आगे)

यहाँ वेद का आशय किसी ऐसे शस्त्र से है जो शत्रु का विनाश कर अपने प्रयोग करने वाले के पास बिना उसका अनहित किये बन्धुवत् वापस लौट आता है।

दूसरे मन्त्र में-**'कृत्या आकृत्यामून् कृत्याकृतो जहि।।**

अथर्व० १०।१।६

(प्राणघातक उपकरणों द्वारा निर्मित कृत्या)।

ऐसी कृत्या का प्रयोग यजुर्वेद अ० ५ मन्त्र २३ में वर्णित देवासुर-संग्राम में असुरों-द्वारा किया गया था। असुरों ने कृत्या और वलग दोनों को पृथ्वी में गाड़ दिया था। देवों को इस भेद का ज्ञान समय से पूर्व हो गया है। उन्होंने उन्हें उखाड़ फेंका और वे निरापद हो गये। ऐसा प्रतीत होता है कि वेद का निर्देश वर्तमान युद्ध में काम करने वाली 'माइन्स' (सुरंगों) की ओर है जो शत्रु का विनाश करने के लिए स्थान-स्थान पर गाड़ दी जाती हैं और उखाड़ने पर निरापद हो जाती हैं जैसा शतपथ में वर्णित है-

यदा वै कृत्यामुत्खनन्त्यथ साऽलसा मोधा भवति।

कुछ ऐसे कृत्याओं का भी वर्णन है जिनके बुरे प्रभाव को ओषधियों के द्वारा निवारण किया जाता था-

'अनयाहमोषाध्या सर्वाः कृत्या अदूदुषम्।'

अथर्व० ४।१८।५

सम्भवतः ये कृत्याएँ वर्तमान युद्ध में प्रयोग में आने वाली दूषित गैसें होंगी, जिनका बुरा प्रभाव ऑक्सीजन आदि के द्वारा दूर किया गया है। कुछ कृत्याएँ वर्तमान काल की तोपों की भाँति होंगी जिनके लिए यजुर्वेद ने 'बृहद्रवा' एवं अथर्ववेद ने 'अप्रकामनानदती निनद्धा गर्दभीव' 'गर्दभी के समान भयंकर गर्जना करने वाली बताया है।' कुछ ऐसे भयंकर यन्त्र-चालित टैंकों का भी वर्णन है जो कल-पुर्जो द्वारा निर्मित होकर पहियों-द्वारा चलते थे। यथा

यस्ते परूंषि संदधौ रथस्येवर्भुर्धिया।

तं गच्छ तत्र तेऽयनमज्ञातस्तेऽयं जनः।।

अथर्व० १०।१।८

कल-पुर्जो द्वारा सुदक्ष कारीगरों-द्वारा निर्मित 'महापरूंषि' भयंकर शब्द करने वाली-

तेनाभि याहि भञ्जत्यनस्वतीव वाहिनी विश्वरूपा कुरूटिनी।

अथर्व० १०।१।१५

[तेन-इसलिए, अनस्वती इव वाहिनी-रथ, हाथी, अश्वयुक्त सेना के समान, विश्वरूपा-अनेक रूप धारण करने वाली, कुरूटनी-भयंकर शब्द करने वाली, भञ्जति-शत्रु सेना को नष्ट भ्रष्ट कर देती है]

इन अस्त्र-शस्त्रों से भीषण नर-संहार होता था अतएव निरपराध जनता एवं पशुओं का संहार न हो। यही वेद कहता है।

'अनागोहत्या वै भीमा कृत्ये मा नो गामश्वं पुरुषं वधीः'

-अथर्व० १०।१।२६

[हे कृत्ये! अनागोहत्या-निरपराध पुरुषों का घात, भीमा-बड़ा उग्र होता है। अतः, गाम् अश्वं पुरुषं मा वधीः- हमारे निरपराध गौ, अश्व एवं साधारण जनता को मत मारो]।

जिन वेदों में वर्तमान काल के युद्ध में व्यवहृत अर्वाचीन अस्त्र-शस्त्रों का वर्णन है उन्हें सायणाचार्य ने जादू-टोने द्वारा शत्रुओं के वध के अर्थ में लगाया है।

अभिचार

द्वेष के वशीभूत होकर शत्रु-विनाशार्थ उस पर आक्रमण करने का नाम अभिचारण है। लेकिन सायणाचार्य ने जादू-टोनों के द्वारा शत्रु को हानि पहुँचाने के हेतु इनका प्रयोग बताया है।

'परि त्वा पातु समानभ्यो-भिचारात् सबन्धुभ्यः।'

यत् कि चासौ मनसा यच्च वाचा यज्ञैर्जुहोति हविषा यजुषा।

तन्मृत्युना निर्ऋतिः संविदाना पुरा सत्यादाहुति हन्त्वस्य।।

-अथर्व० का० ७, सू० ७०, मंत्र १

[मदोमत्त होकर दम्भपूर्वक यज्ञ करने वाले क्रूर पापी पुरुष को परमात्मा आसुरि योनियों में पहुँचा देता है।] श्रद्धारहित यज्ञ, दान तप सब निष्फल होते हैं। इस मन्त्र का सायण ने तुषों को होम कर शत्रु को नष्ट करने एवं कष्ट पहुँचाने के अर्थ में प्रयुक्त करना बताया है।

(२) प्रजातन्त्रवाद के नियमों के आधार पर राजा का चुनाव हो। यथा-'तत् उत्तरम् इन्द्रम् भुजे'-(अथर्ववेद) [प्रजा में से उत्तम व्यक्ति को चुनकर राज-कार्य में नियुक्त करें]।'एनं देवाः विश्वे अनुमदन्तु' (अथर्ववेद) [इस राजा के उत्तम शासन से प्रसन्न होकर समस्त प्रजा को आशीर्वाद दे।] इस सूक्त को सायण ने बिजली से दग्ध वृक्ष की समिधाओं का चयन करने के अर्थ में प्रयुक्त करना बताया है।

(३) इदं देवाः शृणुत ये यज्ञिया स्थ भरद्वाजो मह्यमुक्थानि शंसति।

पाशे स बद्धो दुरिते नि युज्यतां यो अस्माकं मन इदं हिनस्ति।।

-अथर्व० काण्ड २, सूक्त १२, मं० २

[मनुष्य अपने जीवन को यज्ञरूप समझकर वेद-मन्त्रों के श्रवण, मनन, निदिध्यासन के द्वारा मन को वश में करके, काम, क्रोध आदि शत्रुओं पर विजय प्राप्त करे]। इस मन्त्र को सायण ने अभिचार के लिए दण्ड काटने के अर्थ में प्रयुक्त करना बताया है।

(४) यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्।

द्वौ संनिषद्य यन्मत्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।

-अथर्व० ४।१६।२

[जो खड़ा है, जो चलता है, जो दूसरों को ठगता है, जो छिपकर पाप करता है, जो दूसरों को कष्ट पहुँचाता है और जो दो व्यक्ति मिलकर दुर्मन्त्रणा करते हैं उन सबका ज्ञान राज्य के गुप्तचर विभाग के अध्यक्ष को होना चाहिए।] ऐसे सुन्दर मंत्र का अर्थ सायण ने अभिचार-कर्म में शत्रु को ललकारने के अर्थ में प्रयुक्त करना बताया है।

जादू-टोना

विनियोगकारों ने दुष्ट इच्छाओं की पूर्ति करने के लिए इनका प्रयोग बताया है।

या प्लीहानं शोषयति कामस्येषुः सुसन्नता।

प्राचीनपक्षा व्योषा तया विध्यामि त्वा हृदि।।

-अथर्व० ३।२५।३

वेद ने इस सूक्त में कामशास्त्र की रीति से दाम्पत्य-प्रेम-वृद्धि का बड़ा मार्मिक वर्णन किया है। उसके स्थान में सायण ने लिखा है 'उतुदस्त्वा इति सूक्त' जपन् स्त्रीवशीकरणकामः अंगुल्यः स्त्रियं नृदेत्' [स्त्री को अपने वश में करने के लिए इस मंत्र को पढ़कर उसको उँगली से स्पर्श करे] अथवा बदरी वृक्ष के २१ काँटे घी में भिगोकर मार्ग में डाल देने से स्त्री वश में हो जाती है।

द्विषो नो विश्वतो मुखाति नावेव पारय।

अप नः शोशु चदघम्।।

-अथर्व० ४।३३।७

'अग्नि-स्वरूप परमेश्वर से मानसिक पापों को जलाकर समूल उच्छेद करने' की प्रार्थना की गई है। मन के पवित्र होने से स्त्री-पुरुषों के कामजनित विकार भी शान्त हो सकते हैं। सायण ने इसको कंकड़ फैंक कर स्त्री को अनुकूल बनाने के अर्थ में प्रयुक्त करना बताया है।

उत्तरानपर्णे सुभगे देवजूते सहस्वति।

सपत्नीं मे परा णुद पति मे केवलं कृधि।।

-अथर्व० काण्ड ३, सूक्त १७, मंत्र २

इस मंत्र में ब्रह्मविद्या की सपत्नी तामस अविद्या के मूलोच्छेदन का प्रकरण है। उसके स्थान में सायण ने सौत को वश में करने के लिए वाणपर्णी औषधि के पत्तों को लाल बकरी के दूध में पीसकर सेज पर डालने का अर्थ किया है। क्या वेद में सपत्नी-विधान भी है?

यथेदं भूम्या अधि तृणं वातो मथायति।

ए वा मथ्यामि ते मनो यथा मां कामिन्यसो यथामन्नापगा असः।।

-अथर्व० काण्ड २, सूक्त ३०, मंत्र १

यहाँ पर परस्पर एक दूसरे के मन को आकृष्ट करने का उपदेश दिया गया है। उसके स्थान में वृक्ष की छाल, तगर, अंजन, कुष्ठ आदि औषधियों का प्रयोग करके स्त्री के शरीर पर लगाने से स्त्री को वश में करने की बात कही गई है।

भगमस्या वर्च आदिष्यधि वृक्षादिव स्त्रजम्।

महाबुघ्न इव पर्वतो ज्योक् पितृष्वास्ताम्।।

-अथर्व० काण्ड १, सू० १४, मंत्र १

यह सूक्त कन्यादान में कन्या स्वीकार करके विवाह-द्वारा सौभाग्य उत्पादन करने के बदले कौशिक ने शौर्भाग्य-प्रकरण में प्रयुक्त किया है। सायण ने स्त्री के कपड़े-जेवर छीन कर घर से निकालकर उसके माँ-बाप के यहाँ आजीवन छोड़ देने के अर्थ में इसे व्यवहृत किया है।

घृणित विनियोग

अब इससे आगे कुछ ऐसे घृणित प्रयोगों का वर्णन है जो सभ्य समाज की सारी सीमाओं का उल्लंघन कर गये हैं।

तदिदास भुवनेषु ज्येष्ठं यतो जज्ञ उग्रस्त्वेषनृम्णः।

सद्यो जज्ञानो नि रिणाति शत्रूनन यदेनं मदन्ति विश्व ऊमाः।।

-अथर्व० ५, सूक्त २, मंत्र १

यह सूक्त जगत् स्त्रष्टा की सर्जन शक्ति के वर्णन में प्रयुक्त है। उसके स्थान पर ऋतुमती स्त्री के रज को तर्जनी और मध्यमा उँगली द्वारा खाने के अर्थ में प्रयुक्त किया गया है।

(क्रमशः)

पृष्ठ 2 का शेष-हम धर्म के लक्षणों...

सत्य है वही विश्वास का मूल तथा सत्य का आचरण ही उसका फलस्वरूप है, असत्य कभी नहीं दीक्षया गुप्ता अर्थात् विद्वानों को सत्य परीक्षा से रक्षा को प्राप्त हों और मनुष्य आदि प्राणियों की रक्षा में परम पुरुषार्थ करो यज्ञो प्रतिष्ठिता अर्थात् यज्ञ जो सब में व्यापक अर्थात् परमेश्वर अथवा सब संसार का उपकार करने वाला अश्वमेधादी यज्ञ अथवा जो शिल्प विद्या सिद्ध करने उपकार लेना जो यज्ञ है, इस तीन प्रकार के यज्ञ में सब मनुष्य यथावत् प्रवृति करें। जब तक तुम लोग जीते रहो, तब तक सदा सत्य कर्म में ही पुरुषार्थ करते रहो किन्तु इसमें आलस्य कभी मत करो। ईश्वर का यह उपदेश सब मनुष्य के लिए है।

ब्रह्म पदावायं ब्रह्मणो-ऽधिपतिः।।४।।

वेद अर्थात् ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद इन चार वेद रूपी जिस वेदवाणी का प्राप्ति योग्य ज्ञान और ब्रह्म अर्थात् ब्रह्माण्ड का जानने वाला परमेश्वर जिसका स्वामी है।

मन्त्र इस बात को स्पष्ट कर रहा है कि प्रभु द्वारा प्रसाद रूप में दिए इन चार वेद का ज्ञान निश्चय ही प्राप्त करने योग्य है। इस ज्ञान में ही हमारी सब प्रकार की समस्याओं का समाधान दिया गया है। हमने यदि किसी प्रकार की भी समस्या का समाधान पाना है तो हमें निश्चय ही वेद की शरण में जाना होगा। वेद की शरण के बिना हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। इन वेद का स्वामी रूप यह परमपिता ही जाना जाता है क्योंकि श्रृष्टि के आदि में उस पिता ने वेद का यह ज्ञान प्राणी मात्र के कल्याण के लिए चार ऋषियों के माध्यम से हमें दिया था।

तामाददानस्य ब्रह्मगवीं जिनातो ब्राह्मण क्षत्रियस्य।।५।।

इस वेदवाणी के ज्ञाता को ब्राह्मण कहा जाता है। ब्राह्मण का अर्थ ही है कि जो ब्रह्म ज्ञान में विचरण करे तथा ब्रह्म ज्ञान कहते हैं उस ज्ञान को जो ब्रह्म अर्थात् ईश्वर ने स्वयं दिया हो। इस से स्पष्ट होता है कि ईश्वर द्वारा सृष्टि के आदि में एक ज्ञान दिया गया था। इस ज्ञान को ही वेद के नाम से जाना गया तथा जो इस ज्ञान में विचरण करता है अर्थात् इस ज्ञान को न केवल ग्रहण ही करता है बल्कि इसे दूसरों को भी बांटता है, दूसरों को भी उपदेशित करता है, उसे ब्रह्म में विचारण करने वाला अर्थात् ब्राह्मण कहा गया है। अतः मन्त्र कहता है कि ब्राह्मण इस ज्ञान का अधिकारी है तथा जो क्षत्रिय ब्राह्मण से यह ज्ञान छीनने का प्रयत्न करता है :

अप क्रामति सूनृता वीर्य१-पुण्या लक्ष्मीः।।६।।

ऐसे क्षत्रिय का यश और कीर्ति चली जाती है, नष्ट हो जाती है। इतना ही नहीं उसकी वीरता का भी नाश हो जाता है तथा उसका मंगल करने वाली लक्ष्मी भी उससे दूर हो जाती है। अब वह चक्रवर्ती राज्य का अधिपति नहीं रहता।

भाव यह है कि जो क्षत्रिय वेदपरायण ब्राह्मण का आदर नहीं करता तथा उस से यह ज्ञान छीनना चाहता है, उस का यश कीर्ति बल व धन, सब कुछ नष्ट हो जाता है तथा उसका नाम लेने वाला इस संसार में कोई नहीं रहता।

इन सब का भाव यह है कि वेदवाणी संसार के सब प्राणियों को आनंद देने वाली है। इस प्रकार का आनंद देने वाली, सब को सुखी रखने वाली, सब को प्रसन्नता देने वाली है।

इस वेदवाणी की सहायता से सब लोग अपने दुःखों को दूर करते है। सब की हितकारी होने के कारण सब लोग इसे पाना चाहते हैं किन्तु कुछ राजा ऐसे भी होते हैं जो स्वयं को छोड़ कर अन्य किसी को सुखी देखना पसंद ही नहीं करते। इस प्रकार के राजा अपने राज्य में वेदवाणी का प्रचार नहीं होने देते, वह इस के प्रचार पर रोक लगा देते हैं। इस प्रकार के अन्यायी राजा द्वारा वेदवाणी के प्रचार और प्रसार पर रोक लगाने के कारण लोग इसे मूर्ख मानते हैं। उसके राज्य में मूर्खता जैसा वातावरण बन जाता है तथा प्रत्येक कार्य में मूर्खता ही दिखाई देती है। इससे देश भर में अनियमितता छा जाती है। यह अनियमितता लड़ाई-झगड़ा व कलह तथा कलेश को जन्म देते हैं। हम जानते हैं कि जहाँ लड़ाई झगड़ा, कलह क्लेश होता है, वहां धन का नाश होता है, निर्धनता आ जाती है तथा राजा का खजाना धीरे धीरे खाली होने लगता है। इस प्रकार के राज्य से धर्म पलायन कर जाता है तथा उसका स्थान ले लेता है अधर्म। अतः इस प्रकार के राज्य का दुर्बल, धर्महीन तथा निर्धन होना आवश्यक हो जाता है। इस सब से बचने के लिए वेद प्रचार में कभी प्रमाद नहीं आने देना चाहिए।

शारदा देवी छोटूसिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट द्वारा हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र-छात्राओं को दशम् पुरस्कार वितरण

आर्य नेता स्वतन्त्रता सेनानी स्व. श्री छोटू सिंह आर्य संस्थापक अध्यक्ष आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर की स्मृति एवं स्व. श्रीमती दिव्या आर्य धर्मपत्नि श्री प्रमोद आर्य की पंचम् पुण्यतिथि की पावन स्मृति में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं सैन्ट्रल बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा 2016-17 में अलवर जिले के हैहय क्षत्रिय स्वजातीय मेधावी छात्र एवं छात्राओं के लिए ट्रस्ट की ओर से दशम् पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आज दिनांक 8 सितम्बर 2017 शुक्रवार को आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर पर सायं 3:45 बजे यज्ञ से प्रारम्भ हुआ। जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा-श्री शिव कुमार कौशिक एवं धर्मेन्द्र शास्त्री रहे। इस समारोह के मुख्य अतिथि श्री अमर मुनि पूर्व महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान एवं विशिष्ट अतिथि डॉ० चिराग जायसवाल, श्रीमती रश्मि गोपालिया, पूर्व पार्षद, श्री ओम प्रकाश सोमवंशी, अध्यक्ष हैहय क्षत्रिय सभा अलवर रहे। पुरस्कार वितरण श्रीमती कमला शर्मा-निदेशक, आर्य कन्या विद्यालय समिति, अलवर, श्रीमती इन्द्रा आर्य, ट्रस्टी-शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर, श्रीमती सुमन आर्य, डायरेक्टर छोटू सिंह आर्य धर्मार्थ समिति, अलवर श्रीमती दिविशा आर्य ट्रस्टी-शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर ने माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान एवं सैन्ट्रल बोर्ड की माध्यमिक परीक्षा 2016-17 में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त करने वाले हैहय स्वजातीय छात्र/छात्राओं कोमल सोमवंशी, देवान्शु वर्मा, सार्थक आर्य, स्नेहा आर्य, दिव्यांशी सिंह, संस्कार गोपालिया क्रमशः 2100-2100 रूपये और प्रियांशु धानावत, शिवम कुमार बेनीवाल, हर्षिता सोमवंशी, भूमिका सिंह, जाह्नवी सिंह, डोली कुमारी, कोमल जायसवाल, आर्यन जायसवाल, तानिया को क्रमशः 1500-1500 रूपये तथा कुणाल जायसवाल, बबीता बेनीदाल, सिया नोहवाल, नेहा घटवाल, विशाल जायसवाल, अनिरूद्ध धानवत को क्रमशः 1100-1100 रूपये शारदा देवी छोटू सिंह आर्य चैरिटेबल ट्रस्ट, अलवर की ओर से नकद राशि एवं स्मृति चिन्ह देकर पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर श्री छोटू आर्य धर्मार्थ हॉस्पिटल द्वारा निःशुल्क चिकित्सा कैम्प लगाया गया। जिसमें लगभग 150 रोगियों को निःशुल्क परामर्श दिया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री प्रदीप कुमार आर्य, कमला शर्मा, प्रमोद आर्य, सौरभ आर्य, अन्यता आर्य, श्रेय आर्य, नरेन्द्र सिंह धानावत, गिर्राज प्रसाद जासवाल, ईश्वरी देवी शर्मा, कृष्ण लाल अदलखों, धर्मवीर आर्य, सुभाष आर्य, ईश्वरी चक्रवर्ती, खमेन्द्र चन्द्रावत, रमन घटवाल, राजकुमार नधेडिया, जितेन्द्र जायसवाल, विष्णु सोमदंशी, हैहय क्षत्रिय समाज एवं आर्य समाज के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। अन्त में दो मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। मंच संचालन श्री बृजेन्द्र देव आर्य ने किया।

आर्य समाज बरनाला में श्री कृष्ण जन्माष्टमी पर्व सम्पन्न

रविवार को आर्य समाज, बरनाला में योगीराज श्री कृष्ण का जन्मोत्सव वैदिक पद्धति से हर्षोल्लास एवं श्रद्धापूर्वक मनाया गया। पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री ने वेद मन्त्रोच्चारण द्वारा हवन सम्पन्न करवाया। जिसमें श्री विजय आर्य एवं श्री ओम प्रकाश जी सपत्नी यजमान के रूप में आहुतियाँ प्रदान की। तत्पश्चात् पुरोहित श्री रणजीत शास्त्री ने श्री कृष्ण के जीवन-चरित्र पर प्रकाश डालते हुए उस महापुरुष के महान् चरित्र से शिक्षा ग्रहण करने की प्रेरणा दी। श्री राम चन्द्र आर्य, श्री शिव कुमार बत्ता एवं श्रीमती रंजना मैनन ने अवसर अनुकूल भजन गाए। श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कॉलेज की प्राचार्या डॉ० श्रीमती नीलम शर्मा ने अपने वक्तव्य में श्री कृष्ण के जीवन की महत्वपूर्ण प्रेरणादायक घटनाओं का वर्णन किया। बरनाला की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं के विद्यार्थियों ने भजन व भाषण प्रस्तुत किए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मानयोग मंत्री श्री भारत भूषण मैनन जी ने अपने वक्तव्य में श्री कृष्ण के सन्देश को बताया कि हमें अपने जीवन में पूर्ण निष्ठा व लगन से अपनी डियूटी निभानी चाहिए। आर्य समाज के वरिष्ठ उप-प्रधान श्री हरमेल सिंह जोशी ने 'योगः कर्मसु कौशलम्' का व्याख्यान करते हुए श्री कृष्ण के जीवन से वेद संगत चरित्र को ही अपने जीवन में धारण करना चाहिए। अन्त में आदरणीय प्रधान डॉ० सूर्यकान्त शोरी जी ने अपने धन्यवाद कथन में चक्रसुदर्शनधारी, योगी राज श्री कृष्ण को एक सच्चा कर्मयोगी एवं ज्ञान योगी बताया। और सभी श्रोताओं को अपने घरों में आर्य समाज के विधि-विधान द्वारा वैदिक-संस्कारों को अपनाने की प्रेरणा दी। शान्ति-पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मंच संचालन का कार्य कोषाध्यक्ष श्री सुखविन्द्र लाल मारकण्डा जी ने बाखूबी से निभाया।

तिलक राम मन्त्री आर्य समाज, बरनाला

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में हिन्दी दिवस धूमधाम से मनाया

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में आर.के.आर्य कालेज के सभागार में हिन्दी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर मुख्यतिथि के रूप में पधारे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज का स्वागत करते हुये कालेज के कार्यकारी प्रिंसीपल अमरजीत सिंह गिल। उनके साथ खड़े हैं आर्य समाज के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज, वक्ता श्री जगत प्रकाश, सचिव श्री जे.के.दत्ता, वक्ता श्री सुरेश सेठ। दूसरे चित्र में उपस्थित आर्यजन एवं विद्यार्थी।

आर्य समाज नवांशहर के तत्वावधान में राधाकृष्ण आर्य कालेज, बी.एल. एम.गर्ल्ज कालेज व डी.ए.एन. कालेज के संयुक्त व अतुलनीय सहयोग से राधाकृष्ण आर्य कालेज के हाल में हिन्दी दिवस का कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें मुख्यातिथि श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, मुख्य वक्ता श्री सुरेश सेठ जी एवं श्री जगत प्रकाश जी ने विशेष रूप से पधार कर अपने वक्तव्य से व उपस्थिति से उल्लास को चौगुणा किया। हिन्दी दिवस का कार्यक्रम इस प्रकार रहा। सर्वप्रथम अतिथियों व वक्ताओं ने दीप प्रज्जवलन करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। उसके बाद बी. एल.एम. गर्ल्ज कालेज की छात्राओं ने संस्कृत में सरस्वती वन्दना गाकर सब को मंत्रमुग्ध कर दिया। तत्पश्चात डी.ए.एन. कालेज की छात्रा ने हिन्दी के विषय में एक सुन्दर कविता सुनाई। श्री सुरेश सेठ जी ने व श्री जगत प्रकाश जी ने अपने सारगर्भित वक्तव्य में आर्य जनों का हिन्दी की ओर कैसे ध्यान हो लोगों को यह संदेश दिया। आर्य समाज नवांशहर के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी ने अपने स्वागत उद्‌बोधन में सबका सुस्वागत व आभार प्रकट किया व कहा कि हमें हिन्दी लिखने व बोलने में शर्म नहीं गर्व महसूस होना चाहिये। बी.एल.एम. गर्ल्ज कालेज की छात्रा ने संस्कृत से संस्कृति हमारी और हिन्दी से हिन्दोस्तान है कविता सुनाई। आर.के.आर्य कालेज की छात्रा ने हिन्दी हिन्द की बिन्दी है कविता गाकर सब को सराबोर किया। समारोह के मुख्यतिथि श्री प्रेम भारद्वाज ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हिन्दी के विकास के लिये प्रतिबद्ध है और रहेगी। आर्य शिक्षण संस्थाओं में हिन्दी व संस्कृत के विकास के लिये हर संभव प्रयास करेगी। स्वतन्त्रता के पश्चात उम्मीद थी कि हिन्दी भाषा को उसका उचित स्थान मिलेगा परन्तु कुछ विकृत मानसिकता के शिकार लोगों ने स्वतन्त्रता के पश्चात भी हिन्दी भाषा का विरोध किया। संविधान में तो राष्ट्रभाषा का दर्जा दे दिया गया परन्तु यह दर्जा वास्तविकता से कोसों दूर है। आज के नेता हिन्दी को छोड़कर अंग्रेजी में भाषण देना अपनी शान समझते हैं। हिन्दी बोलने वाले को अनपढ़ और गंवार समझा जाता है। अंग्रेजी पढ़े लिखे लोग हिन्दी बोलने में शर्म महसूस करते हैं। आज आवश्यकता को अपनाने की आवश्यकता है। जब तक हिन्दी भाषा को व्यवहार में नहीं अपनाएंगे तब तक हिन्दी दिवस मनाने का कोई औचित्य नहीं रह जाता। वर्ष में एक बार हिन्दी दिवस मनाने से इसकी उन्नति नहीं हो सकती। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने 1875 के आर्य समाज की स्थापना बम्बई में की थी। महर्षि दयानन्द जन्मना गुजराती थे और उनकी सारी शिक्षा दीक्षा संस्कृत में हुई थी। आरम्भ में महर्षि संस्कृत में ही भाषण और लेखन कार्य किया करते थे। प्रचार के लिए जब कलकत्ता पधारे तो वहां भी संस्कृत में ही भाषण दिए जिसका अनुवाद दूसरे विद्वान् किया करते थे। बाबू केशवचन्द्र सेन की प्रेरणा से महर्षि दयानन्द ने यह अनुभव किया कि साधारण जनता तक अपने विचार पहुंचाने के लिए हिन्दी भाषा को अपनाना चाहिए। इसके पश्चात भारतीय जनता की एकता की दृष्टि से महर्षि ने हिन्दी भाषा को अपनाया और अपने सारे ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि की इन भावनाओं और देश की एकता का ध्यान रखते हुए आर्य समाज ने हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार का भरपूर प्रयास किया। न केवल अपने मौखिक प्रचार, लेखन कार्य, पत्र-पत्रिकाओं और दूसरे साहित्य के माध्यम से हिन्दी को हर प्रकार से बढ़ावा दिया। इस प्रकार अपने पिछले इतिहास में आर्य समाज हिन्दी भाषा के प्रचारक, सहायक और संरक्षक के रूप में सामने आया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी वैदिक संस्कृत और हिन्दी के अनन्य उपासक थे। आर्य कालेज की प्रो. रेणु कारा जी ने भारत बनाम इंडिया कविता सुना कर सब का ध्यान आकर्षित किया। आर्य समाज के मंत्री श्री जिया लाल ने सभी उपस्थित जनों को कलम का पैकेट आर्य समाज की ओर से उपहार स्वरूप भेंट किया। सभी कार्यक्रम का संचालन डा. संजीव डाबर ने किया। इस अवसर पर इन महानुभावों की उपस्थिति मुख्य रूप से रही। सर्वश्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, कुलवन्त राय शर्मा, प्रो. विकास तेजी, श्री वीरेन्द्र सरीन, देशबन्धु भल्ला, जे.के. दत्ता, अमित शर्मा, ललित शर्मा, प्रि. राजेन्द्र सिंह गिल, प्रि. तरुणप्रीत वालिया, प्रि.ए.एस. गिल एवं तीनों कालेजों के छात्र व छात्राएं सम्मिलित रहे।

अमित शास्त्री
पुरोहित आर्य समाज

साऊथ अफ्रीका में चल रही 7वीं कॉमनवेल्थ चैम्पियनशिप में आर्य कालेज लुधियाना की छात्रा जसप्रीत को रजत-कांस्य पदक

आर्य कालेज महिला विभाग लुधियाना की बी.ए. तृतीय वर्ष की विद्यार्थी जसप्रीत कौर

आर्य कालेज महिला विभाग लुधियाना की बी.ए. तृतीय वर्ष की विद्यार्थी जसप्रीत कौर ने साऊथ अफ्रीका में आयोजित 7वीं कामनवेल्थ पावर लिफ्टिंग चैम्पियनशिप में कांस्य पदक जीत कर न केवल अपने कालेज का बल्कि पूरे देश का नाम रोशन किया है। इस चैम्पियनशिप में 15 देशों ने हिस्सा लिया। इसमें जसप्रीत ने एक रजत और तीन कांस्य पदक प्राप्त कर तीसरा स्थान प्राप्त किया। इस उपलब्धि पर कालेज की प्रबन्धकीय समिति की सचिव प्रो. सतीशा शर्मा, प्राचार्य डा. सविता उप्पल और खेल अध्यक्ष प्रो. दविन्द्र जोशी ने सब को बधाई दी और भविष्य में भी ऐसी उपलब्धियों की मंगल कामना की। कालेज के महिला विभाग की प्रभारी सूक्ष्म आहलूवालिया ने पूरे स्टाफ को बधाई दी। विशेष रूप से खेल कोच गुरप्रीत सिंह सोनी और खेल विभाग की प्रो. बलजीत कौर की प्रशंसा की। जिनके मार्ग दर्शन में यह जीत हासिल हुई। खेल विभाग के प्रो. सुन्दर सिंह, नवदीप कौर और अमरप्रीत सिंह ने भी बधाई दी। इस सफलता के पीछे जसप्रीत कौर ने अपने कोच व कालेज स्टाफ द्वारा दी गई गाइडैंस को बताया। गुरुओं से मिली शिक्षा और अपनी मेहनत एवं लग्न के बलबूते कालेज की इस खिलाड़ी ने अपने अभिभावकों के साथ साथ आर्य कालेज महिला विभाग का नाम भी रौशन किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने भी आर्य कालेज महिला विभाग की छात्रा जसप्रीत कौर को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि आर्य कालेज लुधियाना आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की प्रमुख शिक्षण संस्था है। इस कालेज में पढ़ाई के साथ साथ खेलों के लिये भी विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है। यही कारण है कि इस कालेज की छात्रा ने कामनवैल्थ खेलों में पदक जीत कर कालेज का नाम रौशन किया।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।